अध्याय - 6

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः अपने दल और चेले बनाने के पाठ्यक्रम के लिए स्वयं को परमेश्वर के सामने समर्पित करें।

2.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मत्ती 18:21 – 21:46**

बारी-बारी पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (मत्ती१८:21 – 21:46) तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

3.	**याद करना** (20 मिनट)	***निश्चितता*** **विजय निश्चित है -1 कुर.10:13**

क. प्रोत्साहित करना (याद करने के लिए)

पढ़े मत्ती 16:3-6 और लूका 10:25-26
खोजें और विचार-विमर्श करेः बाइबल के पदों को याद करना क्यों ज़रूरी है?(चाहे वे लेखाँश हो या अध्याय)
लिख लेः याद किए गए बाइबल के पद आप को इस योग्य बना देंगे कि आप मनुष्य के प्रश्नों के उत्तर दे सकें।

ख. मनन करे (बाइबल के एक लेखांश को)

एक सफेद काग़ज़ पर या श्यामपट पर याद करने वाला पद लिख कर रख लें

विजय निश्चित है **1 कुरन्थियों 10:13**
तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में नहीं पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको। **1 कुर. 10:13**

काग़ज़ के पिछली तरफ बाइबल का का संदर्भ वचन लिख दें।

<u>1. प्रलोभन एक ही समय में परीक्षा भी हो सकती है</u>

मूल शब्द (जी.पीरासमोस) को हिन्दी अनुवाद में परीक्षा या प्रलोभन कह सकते हैं। परीक्षा तो एक प्रकार का टेस्ट होता है जो परमेश्वर हमें और भी सामर्थी और बुद्धिमान बनाने के लिए लेता है। यह हमेंशा हमारा निर्माण करता है। (याकूब 1:2-4; 12) लेकिन प्रलोभन तो हमें पाप करने को उकसाता है और आपको जीवन में नीचे गिरा कर हराना चाहता है। प्रलोभन का स्रोत तो आप का निजि पापी स्वभाव ही होता है। (याकूब 1:13-15) या आपके चारों ओर फैला पापी संसार, (1 युहन्ना 2:15-17) या फिर शैतान (लूका 4:1-13) संदर्भ (1 कुर.10:6-11) स्पष्ट रूप से प्रलोभन के विषय में बताता है जो मूर्ति पूजा, विधर्मी मौज मस्तियाँ, यौन अनैतिकता, और परमेश्वर के विरुद्ध बुड़बुड़ाना आदि को भी प्रलोभन माना जाता है। फिर भी हमारा परमेश्वर इतना सामर्थी है कि वह हर प्रलोभन को जो दुष्टता कर सकता है उसे बदल कर एक परीक्षा बना देता है। कि आप कुछ भला कर सकें। यह इसी बात पर निर्भर करता है कि

आप प्रलोभन का प्रतिउत्तर कैसा देते हैं।

2. परीक्षा या प्रलोभन का स्वभाव ?

एक ही तरह के प्रलोभन हर व्यक्ति के जीवन में आते हैं। और हर कोई उस प्रलोभन को पहचानता भी है क्योंकि यह संसार भर में इसी प्रकार होता है। एक बार नहीं वरन इतिहास में ऐसा बार-बार होते देखा है।

3. परमेश्वर की विश्वासयोग्यता, जब आप प्रलोभन में फँसते हैः

परमेश्वर कभी भी ऐसा नहीं होने देते हैं कि आपका प्रलोभन इतना बड़ा हो कि आप उस पर विजय पाने की सामर्थ न रखते हों। परमेश्वर हमारे सभी प्रलोभनो से बड़ा है और वह न्यायी भी है। वह कभी भी ऐसा होने नहीं देता है कि हमें अपनी सामर्थ से बढ़ कर प्रलोभन का सामना करना पड़े। यदि ऐसा होता है तो परमेश्वर हमें एक मार्ग देता है कि हम उस प्रलोभन से बच कर निकल सकें।

परमेश्वर कभी भी मनुष्य को पाप करने के लिए प्रलोभन नहीं देता है। (याकूब 1:13) लेकिन आपके पापी स्वभाव के कारण वह प्रलोभन को जो परमेश्वर से रिक्त संसार या शैतान लेकर आता है आपके जीवन में आने देता है। जब हम प्रार्थना करते हैं, "हमें परीक्षा में न पड़ने दे पर हमें बुराई से बचा।" (मत्ती 6:13) तब हम परमेश्वर से माँगते हैं कि वह अपनी प्रभुता का मार्ग दिखाए और हमें अपने स्वभाव के अनुसार वह करने की अनुमति न दे जो पाप है। जब भी हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं, "कृपया हमें कुछ ऐसा करने की अनुमति न दें कि हम प्रलोभन की स्थिति में फँस जाएँ।"तब परमेश्वर हमें उस बुरी परिस्थिति से बचा कर बाहर निकाल लेगा। (मत्ती 6:13)

परमेश्वर जीवन में प्रलोभनों में पड़ने की अनुमति क्यों देता है? शैतान, यह पापी संसार, और मनुष्य का पापी स्वभाव ये सभी कोशिश करते रहते हैं कि प्रलोभन देकर वे हमें पाप में गिरा कर तोड़ डाले। लेकिन परमेश्वर उस प्रलोभन को परीक्षा बना कर उसे हमारा निर्माण करने के लिए इस्तेमाल कर लेता है। एक विशष घटना हो सकती है जो एक प्रलोभन लगे परन्तु परमेश्वर के नज़रियों वह केवल एक परीक्षा होती है। (अय्यूब अध्यया 1)

परमेश्वर आपको अपने पापी स्वभाव के कारण एक प्रलोभन का सामना एक परीक्ष3 के रूप में करने देता है। उसकी इच्छा यह नहीं ही है कि आप असफल हो जाएँ। वरन वह तो उस परी7 के द्वारा आप को और सामर्थी बना चाहता है। कोई भी घटना शैतान के नज़रिए से कि आप के लिए प्रलोभन हो सकता है पर परमेश्वर के नज़रिये से वह सदा एक परीक्षा होती है।(अय्यूब अध्याय 1)

परमेश्वर के पास यह अधिकार भी है कि वह कि वह पाप के द्वारा आपकी परीक्षा ले सके। वह नही चाहता है कि आप परीक्षा में असफल हों। उन लोगो के जीवन में जो प्रार्थना नहीं करते हैं। ऐसी परिस्थिति में आप प्रार्थना कर सकते हैं, "परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कर कि मैं तेरी परीक्षा में असफल न होने पाऊँ।"उदाहरण के लिए परमेश्वर ने शैतान को अनुमति दी थी कि वह अय्यूब को हर तरह से प्रलोभन में डाले। लेकिन अय्यूब का भरोसा परमेश्वर पर था इस लिए अन्त में वह बहुत ही परिपक्व पुरुष बन गया था।

परमेश्वर कई बार लोगों को अपने पापी स्वभाव के कारण अनुमति देता है कि वह प्रलोभन में फँस जाएँ। परमेश्वर की मर्ज़ी है कि वह बीच में आकर सहायता करे या नहीं। विशेषकर वे लोग जो न तो प्रार्थना करते हैं और न ही परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं। वे परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भी भरोसा नहीं करते हैं। (याकूब 4:2) प्रलोभन उनके लिए बहुत शक्तिशाली होगा और वे उससे निकलने की राह नही ढूँढ पाएँगे। उदाहण के लिए जब लोग सच को दबा देते हैं या सच को किसी झूठ से बदल देते हैं तब परमेश्वर उनको उनकी पापी इच्छाओं पर छोड़ देते हैं। (रोमियो 1:24-25) परमेश्वर के बिना कोई भी पाप पर विजय नहीं पा सकता है।

4.प्रलोभनों से बचने के व्यवहारिक रास्ते

- **उत्पत्ति 39:9-10** तुरन्त न कह कर मना करें। बहकाने वाले सुझाव और योजनाओं पर चलने से मना करो। (युहन्ना 8:3-8)
- **उत्पत्ति 39:12** प्रलोभन के स्थान या स्रोत से दूर चले जाओ। सदा इन प्रलोभनो से दूर भागें - यौन अनैतिकता (नीति वचन 4:14-15, 23-27,5:1-23; 1 कुर.6:18) मूर्तिपूजा (1 कुर.10:14) पैसे का प्यार (1 तिमु.6:9-11) और जवानी की बुरी इच्छाओं के लिए (2 तिमु.2:22; 1 पतरस 4:3-4)
- **भजन 119:9,11,** तुरन्त परमेश्वर के विचारों को सोंचना शुरू करें। बाइबल के पदों को याद करें और उनका प्रयोग करेंविशेषकर जब आपका सामना अशुद्ध विचारों से हो रहा हो या आप झूठ तथा नकारात्मक विचारों का सामना कर रहे हों। (इफीसियों 6:16)
- **सभोपदेशक 4:9-10** तुरन्त अन्य मसीही लोगों की संगति की खोज करें।
- **मत्ती 26:41**देखते रहें और प्रार्थना करते रहें। विशेषकर जब आप आत्मिक युद्ध करते-करते थक गए हों।
- **लूका 6:27-28** तुरन्त मसीही सेवकाई के साथ सकारात्मक प्रतिउत्तर दें (मत्ती 5:38-42) अपने हाथों से कुछ सकारात्मक करो या किसी की सेवा करो। (युहन्ना 8:3-11)
- **काम 16:18** अपने आत्मिक अधिकार का प्रयोग करें और दुष्ट को यीशु के नाम से दूर हो जाने की आज्ञा दें। (मत्ती 4:3-4)
- **1 तिमु.6:9** गलत लक्ष्यों पर और गलत आदतों से बचे रहें। (अय्यूब 31:1)
- **याकूब 4:7-8** तुरन्त अपने आप को परमेश्वर को समर्पित कर दें। (1पतरस 5:8-9)

ग. याद करना और पुनरावलोकन

1.लिखेः बाइबल के पद को किसी खाली कार्ड पर या अपनी कापी के खाली पन्ने पर लिख लें।
2.याद करें बाइबल का पद प्रार्थना में प्रार्थना में विजय निश्चित है को सही रीति से याद करें।(1 कुर.10:13)
3.पुनरावलोकनः दो-दो के दल में बाँट कर पिछली बार याद किए पद की जाँच करें।

4. बाइबल अध्ययन (70 मिनट)

(जीवन के विषय में प्रश्न)
मै कौन हूँ? इफिसियों 2:1-22

इफिसियों 2:1-22काबाइबल अध्ययन करने के लिए अध्ययन के पाँच कदमो के तरीके का प्रयोग करें।

तरीका 1. पढ़े **परमेश्वर का वचन**
पढ़ें. आइए एक साथ पढ़ेंगे इफिसियों 2:1-22
आईए हम बारी बारी से एक पद पढ़ेंगे जब तक लेखाँश समाप्त न हो जाए।

तरीका 2. खोज करें **अवलोकन**
ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा सच आपके लिए महत्त्वपूर्ण है?
या फिर कौन से सच ने आपके दिल को छू लिया है?
लिख लेःएक या दो सत्य जो आपने खोजे और समझे हैंउन्हे अपनी कॉपी में लिख लें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।
(नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

2:8-9

<u>1.पहली खोज - मैं परमेश्वर के अनुग्रह से बचाया गया हूँ, अपने कर्मो के द्वारा नहीं।</u>

इससे पहले कि मैं यीशु मसीह को अपने दिल और जीवन में ग्रहण किया था मेरा विश्वास था कि मुझे बहुत से धार्मिक नियमों का पालन करना होगा और भले कर्म करने होंगे जो परमेश्वर को खुश कर सकें। मैं सोचता था कि यदि मैं यह सब करूँगा तो शायद परमेश्वर मेरे जीवन को इस पृथ्वी पर समृद्ध और सफल बना दे। और मृत्यु के बाद मुझे स्वर्ग में ग्रहण कर ले। मैं परमेश्वर से अपने सम्बन्ध को एक ठेके का सौदा समझता था। इसलिए मै सोचता था, जब मैं परमेश्वर के लिए कुछ करूँगा तो वह मेरे लिए कुछ करेगा!
लेकिन वह परमेश्वर जिसने बाइबल के द्वारा स्वयं को मुझ पर प्रकट किया था वह मुझे केवल अनुग्रह के द्वारा बचाता है, मैं उसके लिए क्या करता हूँ उसके द्वारा नहीं। मैं ने जाना कि परमेश्वर के उद्धार का काम मेरे लिए सर्वोत्तम और सम्पूर्ण है, हालाँकि मेरी अपनी सारी कोशिशें अपूर्ण सी लगती हैं। तब मैं ने जाना की सम्पूर्ण उद्धार तो एक उपहार है जिसे न तो खरीदा जा सकता है और न ही कमाया जा सका है।

2:18

<u>2.दूसरी खोजः मेरे पास जीवित परमेश्वर तक पहुँचने का मार्ग है।</u>

अनेक लोग कहते हैं परमेश्वर इतना महान है कि कोई भी उसे निजि रूप से जान नहीं सकता है। न वह उससे निजि रूप से बात कर सकता है, और न ही निजि रूप से उसके साथ चल सकता है। अन्य लोग चाहते हैं कि उनका परमेश्वर के साथ एक निजि सम्बन्ध बन जाए। लेकिन फिर भी चाहे वे कितना भी कठिन परिश्रम कर लें वे कभी भी परमेश्वर के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध अनुभव नहीं कर पाते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे न तो उसके शब्दों को सुनते हैं और न ही उसके कार्यों को देखते हैं। और सोचते हैं कि परमेश्वर का को अस्तित्व नहीं है।

लेकिन बाइबल हमें बताती है कि मैं परमेश्वर के कामों को उसकी सृष्टि की रचना में देख सकताँ हूँ।
मैं उसकी आवाज़ को बाइबल पढ़ते समय अपने दिल में सुन सकता हूँ। और मैं उसकी देखभाल अपनी कठिन परिस्थितियों में महसूस कर सकता हूँ। बाइबल बताती है कि जीवित परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने का एक ही सच्चा रास्ता है। और वह रास्ता यीशु मसीह है। परमेश्वर एक ऐसे स्थान पर रहते हैं जो ज्योति से भरपूर है और जहाँ कोई भी मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता है। लेकिन परमेश्वर मुझ तक पहुँच गया। परमेश्वर ने मुझ पर स्वयं को यीशु मसीह के रूप में और उसके द्वारा प्रकट किया है। इतना ही नहीं परमेश्वर ने वह सब कुछ किया जो मेरे उद्धार के लिए ज़रूरी था। उसने मेरे लिए यीशु मसीह का बलिदान दिया जिससे मेरे सारे पापों के लिए पश्चाताप हो सके और वे क्षमा कर दिए जाएँ। जब मैं ने इस बात पर विश्वास किया कि यीशु मसीह ने मेरे पापों के लिए जुरमाना चुकाया था और मुझे परमेश्वर के सामने निर्दोष सिद्ध किया था। तब मैं ने यीशु को अपने दिल और जीवन में उद्धारकर्ता ग्रहण कर लिया था। (वह पवित्र आत्मा के रूप में जो कि यीशु की आत्मा है, मेरे अन्दर वास करने आ गया। यह यीशु की आत्मा ही है जो मेरी परमेश्वर से मुलाकात और संगति करवाती है। (रोमियो 8:9-10) यीशु का आत्मा ही हमे परमेश्वर से मिलवाता हैऔर उसके साथ संगति करने का अवसर भी देता है। यीशु मसीह का आत्मा मुझे में वास करके परमेश्वर की वास्त्विकता और उपस्थिति और उसकी निकटता का अनुभव कराता है। यीशु मसीह के आत्मा के द्वारा मैं परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकता हूँ, मैं उसे स्वयं से निजि रूप से बोलते सुन सकता हूँ। मैं स्वयं भी उससे बात कर सकता हूँ और मै उस के साथ एक निजि सम्बन्ध स्थापित करके जीवन बिता सकता हूँ।

3.तीसरा तरीकाः प्रश्न व्याख्या
ध्यान देः वह कौन सा प्रश्न है जो किसी भी विषय में आप दल से पूछना चाहते हैं?
आईए हम इफिसियों 2:1-22 में जो सत्य निहित हैं उनको समझने की कोशिश करें। और उन बातों के विषय में प्रश्न करें जो अब तक हमें समझ नहीं आई हैं।
लिख लेः अपने प्रश्न सही और स्पष्ट रूप से पूछें और फिर उसे अपनी कॉपी में लिख लें।
गवाही बाँटेः दल के सभी सदस्य दो मिनट तक मनन करें और फिर हर सदस्य अपने प्रश्न को दल के साथ बाँटें।
विचार-विमर्श करेः (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)

नीचे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं और साथ ही कुछ नोट्स भी हैं जिन पर विचार विमर्श किया गया था।)

2:1

<u>प्रश्न 1. "पाप और अपराध में मर जाना"इसका क्या अर्थ है?</u>

नोट्सः यह पद समझाता है कि यीशु मसीह पर विश्वास करने से पहले मैं क्या था। बिना यीशु मसीह के मैं केवल शारीरिक रूप से जीवित था पर आत्मिक रीति से मरा हुआ था। यह सच है कि मैं खाता, पीता, काम करता और सोता था। परन्तु मेरे अन्दर का आत्मा मरा हुआ था। और जब मेरा आत्मा मृत है तो मैं परमेश्वर को नहीं जान सकता और न ही उससे सम्बन्ध रख सकता हूँ।

परमेश्वर एक गैर-मसीही को मृत क्यों समझते हैं जब कि उसमें अनेक नैतिक गुण और भले काम भी पाए जाते हैं? एक गैरमसीही के पास नैतिक गुण हो सकते हैं और वह भले काम भी कर सकता है क्योंकि वह जीवित परमेश्वर की रचना है। ये सब योग्यताएँ परमेश्वर ने ही दी हैं चाहे वह इस बात को माने या न माने। लेकिन एक गैर-मसीही अपने काम परमेश्वर के लिए नहीं करता है और न ही उस पर निर्भर रहता है।वह परमेश्वर पर भरोसा नही रखता है और न ही उसकी आज्ञाओं का पालन करता है। वह किसी भी चीज़ के लिए परमेश्वर का धन्यवाद नहीं करता है और न ही किसी भी बात के लिए परमेश्वर की महिमा करना चाहता है। (मियो 1:21) जो कुछ भी एक गैर मसीही करता है उसका परमेश्वर से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। एक गैर-मसीही केवल अपने लिए जीता है। वह स्वार्थी है, स्वयं केन्द्रित है, अपने निर्देश पर चलता है और परमेश्वर से बिलकुल स्वतन्त्र घूमता है। यह परमेश्वर से आज़ादी, या परमेश्वर से अलग रहना ही आत्मिक मृत्यु है।

:22:1-4,11-12

<u>प्रश्न 2. मसीही बनने से पहले मैं कौन था?</u>

<u>क्या बातें थीं जो मुझे गैर-मसीही बनाती थी?</u>

नोट्सः मसीह में विश्वास करने से पहलेमेरे अन्दर ये सब गुण पाए जाते थेः (इफिसियों 2:1-3, 11-13)

आत्मा में मैं मृत थाः (कुलुसियों 2:13)
मेरी आत्मा में जीवित परमेश्वर की कोई जानकारी नहीं थी। मैं सोचता था कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नही है। मैं यह भी सोचता था कि परमेश्वर कमज़ोर लोगों के दिमाग़ की उपज है। या मेरा विश्वास था कि मैं एक ऐसे परमेश्वर कुछ धर्म गुरूओं रचना है।
मैं संसार के नियमों पर चलता थाः (1 युहन्ना 2:15-17)
तब मैं आस-पास के लोगो की आदतों और जीवन शैली की नकल करता था। मैं वही करता था जो अधिकतर लोग

सोचते थे कि वही महत्त्वपूर्ण और सही है।उस समय अधिकार, शक्ति, मशहूरी और मौज-मस्ती का मेरे जीवन में बड़ा मूल्य था। मैं केवल समृद्धि और सफलता के लिए जीता था। औरों के समान मैं केवल अपने लिए जीता था।

मैं शैतान के रास्तों पर चलता था (जो कि वायुमण्डल का राजा है) (इफिसियों 6:12; कुलुसियों 1:13)मैं हर समय शैतान के समान झूठ बोलता था। कभी-कभी मैं ज्योतिषियों के पास भी जाता था। सुरक्षा के लिए मैं गले में एक माला भी पहनता था जिससे दुष्ट आत्माओं से सुरक्षित रह सकूँ।

मैं अपनी पापी इच्छाओं को संतुष्ट करने में लगा रहता था।

मैं बुरे और अशलील चुटकुलों का आनन्द लेता था। मुझे अपनी आँखों पर नियन्त्रण नहीं था। मेरा अन्तरमन भ्रष्ट था। (कुछ लोग शराब, नशीले पदार्थो, अशलील चित्रों के देखने, लूटमार, हिंसा, जुए, लॉटरी खेलने, और टी.वी, मोबाइल फोन, विडियो गेम्स और इन्टरनेट आदि के दास होते हैं।

मैं अविश्वासी था इस लिए परमेश्वर मुझ से नाराज़ थेः

परमेश्वर को मेरी आज़ादी, स्वयं-केन्द्रित होने, आज्ञा न मानने, मेरी सांसारिकता, और अन्तरमन की भ्रष्टता से घृणा थी।

मैं मसीह से अलग थाः

मैं नहीं जानता था कि जीवित परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा अपना कार्य कर रहा था। मैं सुनता रहता था कि अन्य गैर-मसीही धर्म यीशु मसीह के विषय में बिना कुछ जाने, कि बाइबल के समय में यीशु ने क्या कहा था और क्या किया था। मैं नें यीशु मसीह को पूरी तरह से गलत समझा था। और में यीशु के पीछे चलने वालों को दुष्ट कहता था।

मुझे इस्राएल का नागरिक होने से अलग कर दिया गया थाः

यहाँ पर इस्राएल वह शब्द नहीं है जिसका प्रयोग मध्य पूर्व के यहूदी राष्ट्र में किया जाता है। असली इस्राएल में केवल परमेश्वर के लोग शामिल होते हैं। वे जो परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं और जिन पर परमेश्वर ने स्वयं को यीशु मसीह के रूप में प्रकट किया था। (रोमियो 9:6) मैं परमेश्वर के लोगों का हिस्सा नहीं था इस लिए मेरे पास परमेश्वर के लोगों जैसी सुविधाएँ भी नहीं थीं। मैं विशेषकर बाइबल को नहीं जानता था जिस में अदभुत भविष्यद्वाणियाँ लिखी हैं और साथ ही वायदे और जीवन के मार्गदर्शक भी दिए गए हैं। और मैंने वह सुरक्षा और मार्गदर्शन भी खो दिया है जो परमेश्वर के लोगों को मिलता है।

जिन लोगों से परमेश्वर ने वाचा बाँधी थी उनके लिए तो मैं अनजान थाः

परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ एक समझौता किया था। बार-बार परमेश्वर ने उन से कहा था, "मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँगा और तुम मेरे लोग होगे।"परमेश्वर चाहते थे कि वे उनका बचाने वाला और मित्र बन जाए। वह उनको ऐसे उठा कर ले जाना चाहता था जैसे एक पिता अपने पुत्र को उठा कर ले जाता है वहाँ तक जहाँ उनको होना चाहिए। (व्यवस्थाविवरण 1:31) परमेश्वर ने इस समझौते को फिर से इसे बार-बार अपने लोगों के साथ पक्का किया था। लेकिन मेरे सुसमाचार सुनने से पहले मैं ने इस का अनुभव कभी नहीं किया था कि परमेश्वर ने कहा, "मैं तेरा मित्र हूँ।"

मैं निराश थाः

मेरे पास जीवन का कोई लक्ष्य नहीं था और मुझे जीवन अर्थहीन लगता था। मैं नहीं जानता था कि मैं यहाँ पर क्यों हूँ और मुझे कहाँ जाना है। मैं सदा असुरक्षित और खतरे की धमकी से डर कर जीवन बिताता था।

मैं इस संसार में परमेश्वर के बिना था

मैं एक ऐसा जीवन जी रहा था जिस में जिवित परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं था। मेरे लिए वस्त्विकता केवल यह शारीरिक और भौतिक (नियावी) संसार ही था। मैं स्वयं को नास्तिक बुलाता था।। मैं केवल स्वयं पर केन्द्रित रहता है। एक तरह से कहा जाए तो मैं ही मेरा परमेश्वर था।

2:4-7

प्रश्व 3. जीवित हो जाने, उठाए जाने, और मसीह के साथ बैठाए जाने का क्या अर्थ है?

नोट्सः बाइबल अकसर कहती है कि एक विश्वासी मसीह के साथ मर जाता है और मसीह के साथ फिर से जी उठता है और मसीह के साथ उसकी भी महिमा होती है। इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी मसीह को होता है और उसका सीधा असर एक विश्वासी पर होता है। इसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर पिता विश्वासियों के यीशु मसीह में एक नया दर्जा और एक नई परिस्थिति दे देता है।

न्यायसंगत होना

परमेश्वर विश्वासियों को वही स्थान देता है जो कानूनन मसीह को दिया गया है। इसे ही न्यासंगत होना कहते हैं। जब परमेश्वर एक विश्वासी को देखता है तब वह उसमे केवल यीशु मसीह की धार्मिकता को देखता है। क्योंकि यीश मारा गया था इस लिए उसके साथ उस विश्वासी का जिसने मसीह को ग्रहण किया था उसका पापी स्वभाव भी मर जाता है। उसका न्याय किया गया और उसका तिरस्कार किया गया था उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था और यीशु के साथ दफनाया गया था लेकिन क्योंकि यीशु जी उठा था इस लिए वह मसीही भी जी उठा था अर्थात उसका नया जन्म हो गया था। अब उसका एक नया आत्मिक स्वभाव है। क्योंकि यीशु मसीह स्वर्ग में ऊँचा उठाया गया था इसलिए मसीह की देह भी ऊपर उठा ली जाएगी। और भविष्य में स्वर्ग में एक स्थान प्राप्त कर लेगी। जो कुछ मसीह के साथ हुआ था वह निश्चय ही उन सब के साथ भी होगा जो यीशु पर विश्वास करते हैं। एक मसीही होने का दर्जा गारन्टी देता है कि परमेश्वर अपने सभी वायदों को पूरा करेगा जो उसने एक नए जन्म लिए मसीही के लिए किए थे।

शुद्धिकरणः

परमेश्वर एक नए जन्मे मसीही को सामने एक शर्त रखी है और वह हैजिसे शुद्धिकरण कहते हैं। पवित्र आत्मा (अर्थात मसीह की आत्मा) के कार्य से जो वह मसीही के दिल में करता है उसके द्वारा उस दिल से पाप मर जता है। और तब वह अपना नया जीवन जीना शुरू कर देता है। यह दर्जा एक मसीह को गारन्टी देता है कि वह धीरे धीरे और अधिक नये जीवन का अनुभव करेगा।

2:8-10

प्रश्न 4. यदि भले काम मुझे बचा नहीं सकते हैं तो मै भले काम करने की चिन्ता क्यों करूँ?

नोट्सः

मुझे बचाने के लिए मसीह ने पहले से ही वह भला कार्य कर दिया है जिस की ज़रूरते थी।

वह मारा गया और मुर्दों में सी जी उठा और ऊँचे स्वर्ग पर उठा लिया गया था।। वह स्थान जहाँ पर वे सभी जो उस पर विश्वास करते हैं उठा लिए जाएंगे। उसने वह सारा काम पूरा कर दिया था जो मेरे उद्धार के लिए ज़रूरी था। अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु मसीह ने मेरे पापों के लिए परमेश्वर के मन में जो गुस्सा था उसे दूर किया था। उसने मेरे पापों को क्षमा कर के मुझे पाप की गुलामी से मुक्त कर दिया था। सो अब मेरे लिए क्या करना बचा है? जब मैं यीशु मसीह पर विश्वास करता हूँ तब मैं केवल सम्पूर्ण उद्धार को ग्रहण कर सकता हूँ जो सम्पूर्ण आज़ादी है। मैं तो उद्धार के लायक नहीं

हूँ और न ही मैं उद्धार को खरीद सकता हूँ। उद्धार तो मुझे दिया जाता है क्योंकि परमेश्वर मुझ से प्रेम करता है और वह मुझ पर दयावान है।

मेरी वाहवाही और घमण्ड यीशु के काम को बहुत छोटा बना देता है

यदि मेरे उद्धार के लिए सब कुछ भले कामो के कारण हो जाता या धार्मिक कामों से हो जाता तो यीशु का जीवन बलिदान करने के महान काम को जिसके द्वारा उद्धार मिलता बहुत छोटा हो जाता और हम उसकी महिमा को लूट लेते हैं। तब शायद अन्तिम न्याय के दिन हम डींगे मार सकते हैं कि हमारा उद्धार हमारे भले कामों या धार्मिक कामों के कारण हुआ था। लेकिन मेरे भले काम या धार्मिक काम इतने अच्छे नहीं हैं। यदि हम अपने धार्मिक और अच्छे कामों के कारण न्याय चाहते हैं तब हमारे सारे काम 100% भले होने और पूरे होने चाहिए। (गलातियों 3:10; याकूब का 2:10) लेकिन क्योंकि संसार मे एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं है जिसके काम सम्पूर्ण रीति से भले हैं (रोमियो 3:10-12) किसी भी व्यक्ति का परमेश्वर की नज़रों में उसके अपने भले कामों या धार्मिक कामों को ध्यान में रखते हुए न्याय नहीं होगा। (गलातियों 3:11) हर व्यक्ति चाहे वह बहुत ही धार्मिक हो या एक साधारण मनुष्य हो वह परमेश्वर सम्पूर्ण धार्मिकता और उसकी महिमा से रहित हैं। कोई भी व्यक्ति अपने भले कामों या धार्मिक कामों के आधार पर उद्धार नहीं पा सकता है। कोई भी परमेश्वर के सामने अपनी शेखी नहीं बघार सकता है।

मेरे भले काम आभार प्रकट करने वाले होने चाहिए।

एक विश्वासी होने के नाते मैं भले काम करना चाहता हूँ लेकिन इस लिए नहीं कि मैं उद्धार पा सकूँ। मैं भले काम इस लिए करना चाहता हूँ क्योंकि मैं परमेश्वर के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ। क्योंकि परमेश्वर ही भला है और उसी ने मुझे उद्धार का वरदान दिया है। (मत्ती 5:16;गलातियो 6:9-10) परमेश्वर ने बहुत सारे भले काम तैयार किए है जो इस संसार में एक मसीही को करने चाहिए। (इफिसियों 1:4) इन भले कामों का वर्णन बाइबल में है। (व्यवस्थाविवरण 10:17-18; मरकुस 3:4; रोमियो 12:9-21) इसलिए एक सच्चा मसीही दो बाते करता है, वह परमेश्वर के सर्वोत्त्म काम की स्तुति करता है, कि यीशु मसीह ने अपने प्राणो का बलिदान देकर अपनी मृत्यु और पुनरोत्थान के द्वारा जिसका परिणाम है कि मुझे उद्धार मिला और दूसरी बात वह अपने किए कामों के लिए धन्यवाद करना है क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपना मुफ्त उपहार उद्धार दे दिया है।

2:4-10; 13-22

प्रश्न 5. अब आप कौन है जब आप यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं?
या वे कौन से गुण है जो आपको मसीही सिद्ध करते हैं?

नोट्सः अब जब मैं यीशु मसीह पर विश्वास करता हूँ, तो मेरी अब एक नई पहचान है, एक नई पदवी है, एक नई स्थिति है (इफि.2:4-7) और अब मुझ में नीचे दिए गुण भी हैं।

मेरा परमेश्वर से मिलाप हो गया है।

अब मेरा परमेश्वर से मिलाप हो चुका है और अब मैं परमेश्वर के साथ शान्ति से हूँ।

अब मेरा लोगों के साथ भी मेल-मिलाप हो चुका है।

अब मेरा अन्य जातियों के साथ मेल-मिलाप हो चुका है और वे भी मसीह के विश्वासी बन चुके हैं। अब मैं अन्य लोगों के साथ शान्ति से रह सकता हूँ, अन्य देश के लोगों के साथ भी। (इफि. 2:14-17)

अब मैं आज़ादी से परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकता हूँ। (इफि. 2:18)
अब मैं सदा परमेश्वर की उपस्थिति और उसको अनुभव करने की स्थिति में उसकी निकटता को अनुभव करता हूँ। और उससे बातें कर सकता हूँ। मैं सुन सकता हूँ जब वह मुझ से बातें करता है। और अब मैं अपने दैनिक जीवन में उसके साथ चलता हूँ। (भजन 16:8)

अब में परमेश्वर के लोगों के साथ एक मसीही नागरिक हूँ। (इफि. 2:19(अ))
अब मैं परमेश्वर के राज्य का नागरिक हूँ। अब मैं मानव इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण राज्य से सम्बन्ध रखता हूँ। यह राज्य हर दिन बढ़ता जा रहा है। और जल्दी ही इस सृष्टि में वही एकमात्र राज्य रह जाएगा। (दानिएल 2:44)

अब मैं परमेश्वर के घर और परिवार का सदस्य भी हूँ। (इफि. 2:19(ब))
इस संसार में परमेश्वर का घर या उसका परिवार उसकी कलीसिया है। मेरे पास यह सुविधा है कि मै परमेश्वर को "पिता जो स्वर्ग में है," कह कर बुला सकता हूँ। मेरे पास इस संसार में बहुत से मसीही भाई और बहने हैं। शब्द भाई, बहन या पिता इनका कोई संकेत रूपी शारीरिक सम्बन्ध नहीं है लेकिन इनका आत्मिक अर्थ है।

मैं परमेश्वर के नए मन्दिर का भाग हूँ। (इफि.2:20-22)
यह कोई पत्थरों का मन्दिर नहीं है। वरन यह तो एक "जीवित मन्दिर है जिस में हर मसीही एक जीवित पत्थर के समान निर्मित किया जाता है।"(1 पतरस 2:4-5) परमेश्वर स्वयं इस जीवित मन्दिर में पवित्र आत्मा के रूप में वास करते हैं।इस रीति से परमेश्वर स्वयं मेरे अन्दर वास करते हैं और सभी अन्य मसीहों के अन्दर भी पवित्र आत्मा के द्वारा जो कि परमेश्वर की आत्मा है अर्थात मसीह की आत्मा या फिर मसीह मुझ में रहता है। रोमियो 8:9-10)

<u>तरीका 4.</u> **लागू करना**

ध्यान देः कौन सा सच है इस लेखाँश में जो एक मसीही अपने जीवन में लागू कर सकते है?

गवाही बाँटे और लिख लेः एक दूसरे के दिमाग़ के अन्दर एक तूफान जगा दें और अपनी कापी में एक सूची लिख कर रख लें कि क्या लागू करना सम्भव है। (इफि. 2:1-22)

ध्यान देः ऐसा कौन सा सच है जो परमेश्वर चाहते हैं कि आप अपने जीवन में निजि रूप से लागू करे?

लिख लें:अपनी कापी में वे निजि सच जो आप लागू करेंगे उन को लिख लें। और आज़ाद होकर उस सच को लोगों के साथ बाँटें।

(याद रहे दल के सभी लोग अलग-अलग सच को बताएँगे। या वे उसी सच को अपने जीवन में अलग रूप से लागू करेगे।

नीचे एक सूची दी गई है उन उदाहरणों की जिन्हे लागू किया जा सकता है।

1. इफिसियों 2:1-22 से कुछ उदाहरण जिनको लागू करना सम्भव है।

2:1-4 ध्यान दे कि आप आत्मिक रूप से मृत थे क्योंकि आप गलत मार्ग पर चल रहे थे।

2:6 इस धारणा के पीछे चलें कि, "मैं मसीह में हूँ। अब मैं कभी भी अकेला नहीं हूँ।"

2:5-8 ध्यान दे कि क्या आप सच में यीशु के साथ आत्मिक रूप से जिलाए गए हैं। अर्थात क्या आप ने यीशु के सर्वोत्तम कार्य को जो कि उद्धार है अपने जीवन में ग्रहण किया है जिससे जब भी परमेश्वर आपकी ओर देखे तो वह केवल मसीह की धार्मिकता को देखने पाए।

2:9 इस बात पर ध्यान दें, क्या आप अभी भी कोशिश करेंगे कि परमेश्वर के अनुग्रह को न्याय के कामों, भले कामों और धार्मिक कामों के द्वारा प्राप्त कर लें।

2:10 बाइबल को पढ़े और खोज करें कि परमेश्वर ने आपके लिए कौन से भले काम रखे हैं कि आप उस पर चल सकें।

2:14-17 ध्यान दें कि क्या आप अभी भी अन्य जाति के मसीही लोगों को अपने से नीचा समझते हैं।

2:18: 3:12} अभ्यास करें कि आप परमेश्वर की उपस्थिति में पहुँच सकें, परमेश्वर की आवाज़ को सुन सकें, और परमेश्वर के साथ आत्मविश्वास और आज़ादी के साथ बातें कर सकें।

2:19 ध्यान दें कि क्या आप स्वयं को परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में और उसके घर और परिवार के सदस्य के रूप में देखते हैं।

2:22 इस कटु सत्य पर मनन करें कि परमेश्वर पवित्र आत्मा के रूप में कलीसिया में वास करता है।

2. इफिसियों 2:1-22 से निजि रूप से सच को लागू करने के उदाहरण।

परमेश्वर की सहायता से मै अपने भले या धार्मिक कामों पर निर्भर रहना बन्द कर दूँगा। इसके स्थान पर मैं इस सत्य को याद रखूँगा कि यीशु मसीह ने मेरे पापों के लिए मारा गया था और अब पवित्र आत्मा के रूप में मेरे अन्दर जीवित है।

परमेश्वर की सहायता से मैं दूसरे मसीहों के प्रति अपने व्यवहार को बदलना चाहता हूँ विशेषकर जो दूसरे देशों में रहते हैं और एक अन्य भाषा बोलते हैं। और भविष्य में उनको अपने स्वर्गीय परिवार का हिस्सा मानूँगा।

5.पाँचवाँ तरीका **प्रतिउत्तर**

आईए हम एक सच के विषय में बारी बारी प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने इफि.2:1-22 में हमें सिखाया है। (अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें उस के लिए जो आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है। कोशिश करें कि केवल एक या दो लाइन में ही प्रार्थना करें। याद रखें दल के अन्य लोग अन्य विषयों पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

लगातार प्रार्थना करते रहेः दो या तीन के दल बना कर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें और साथ ही संसार के लिए भी प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को तैयारी के लिए घर का काम लिखित रूप में देंगे और उसे कापी पर उतारने को कहेंगे।

1.<u>समर्पणः</u> हर सदस्य किसी एक सत्य को लागू करने के लिए जो सम्भव है समर्पण करेगा।

2.<u>परमेश्वर के साथ निजि समयः</u> परमेश्वर के साथ एक निजि समय निर्धारित करें जिस में मत्ती 22:1 – 25:13 से हर दिन आधा अध्याय पढ़ेंगे। और सत्य खोजने के लिए अपने मनपसंद तरीके का प्रयोग करेंगे। अपने नोट्स बनाएँ।

3.<u>याद करेः</u> मनन करके बाइबल के नए पदो को याद करें जो आश्वासन देते हैं कि प्रार्थना में विजय है। (1 कुर.10:13) हर दिन पिछले तीन पदों को फिर से दोहराएँ।

4.<u>प्रार्थनाः</u> किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष चीज़ के लिए प्रार्थना करें कि इस हफ्ते परमेश्वर आपके लिए क्या नया कर रहा है। (भजन 5:3)

5.<u>अपनी कापी को पूरा करेः</u> आपने कितने चेले बनाए, इसके साथ वह सभी नोट्स जो आपने परमेश्वर के साथ निजि समय बिताते समय सीखा, और जो पद आपने याद किए थे। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी लिख लें।